रंग, राग और रचना जीवन में कला का उत्सव

15 अप्रैल को प्रतिवर्ष विश्व कला दिवस (वर्ल्ड आर्ट डे) के रूप में मनाया जाता है।विश्व कला दिवस हमें यह सिखाता है कि कला केवल सौंदर्य नहीं, बल्कि समाज को जोड़ने, समझने और बदलने की ताकत भी रखती है।कला ने विकास, क्रांति, स्वतंत्रता और रचनात्मकता के संदेशों को संप्रेषित करने और वैश्विक मुद्दों को जनता तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कला में वह ताकत है जो हमें जीवन की सबसे कठिन परिस्थितियों में भी एकजुट और संलग्न कर सकती है।कला केवल एक सुंदर चित्र,या पेंटिंग मात्र ही नहीं है, बल्कि यह तो हमारे समाज की धड़कन है, स्थानीय और वैश्विक समुदायों में वे जो परिवर्तन देखना चाहते हैं, उसका हृदय है।

वास्तव में, यह यह दिन कला और रचनात्मकता को बढ़ावा देने, सांस्कृतिक विविधता को सम्मान देने, कलाकारों को सम्मान और पहचान दिलाने,समाज में संवाद, शांति और एकता को प्रोत्साहित करने,शिक्षा में कला के महत्व को उजागर करने तथा युवाओं को कला के प्रति प्रेरित करने के क्रम में हर साल मनाया जाता है। कहना गलत नहीं होगा कि कला हमारे जीवन को सुंदर, अर्थपूर्ण और संवेदनशील बनाती है।अनेक शोध यह बताते हैं कि कला (जैसे पेंटिंग, संगीत, लेखन) तनाव कम करने और मानसिक स्वास्थ्य सुधारने में सहायक होती है और यह दिवस चित्रकला, संगीत, नृत्य, नाटक और साहित्य जैसी विभिन्न कला विधाओं को समर्पित है। बहरहाल, यहां यह कहना गलत नहीं होगा कि मनुष्य और कला का संबंध अत्यंत गहरा, स्वाभाविक और प्राचीन है। जब से मानव सभ्यता का आरंभ हुआ, तब से ही मनुष्य ने अपनी भावनाओं, विचारों और अनुभवों को व्यक्त करने के लिए कला का सहारा लिया। प्रारंभिक मानव ने गुफाओं की दीवारों पर चित्र बनाकर अपने जीवन, शिकार और प्रकृति के साथ संबंध को दर्शाया-और यहीं से वास्तव में कला और मनुष्य का यह अनोखा रिश्ता शुरू हुआ।सच तो यह है कि कला मनुष्य की संवेदनाओं की पूर्ण व अनोखी अभिव्यक्ति है। खुशी, दुःख, प्रेम, क्रोध, आशा और निराशा जैसे भाव जब शब्दों में पूरी तरह व्यक्त नहीं हो पाते, तब कला उन्हें रूप, रंग, संगीत, नृत्य या साहित्य के माध्यम से जीवंत बना देती है। इस प्रकार कला मनुष्य के भीतर की दुनिया को(आंतरिक भावों, संवेदनाओं) बाहर लाने का माध्यम बनती है।कला केवल अभिव्यक्ति ही नहीं, बल्कि यह तो मनुष्य के आत्मिक संतुलन और मानसिक शांति(मेंटल सुदिंग) का भी साधन है। चित्रकारी, संगीत या लेखन जैसे कलात्मक कार्य मनुष्य को तनाव से दूर ले जाकर उसे सृजनात्मक आनंद प्रदान करते हैं। शायद यही कारण भी रहा है कि हर युग में कला ने मानव जीवन को सुंदर और संतुलित बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।इसके अलावा, कला समाज और संस्कृति का दर्पण भी होती है। किसी भी देश या समाज की परंपराएँ, रीति-रिवाज, इतिहास और जीवन शैली कला के विभिन्न रूपों में झलकते हैं। इस तरह कला न केवल व्यक्ति को स्वयं से जोड़ती है, बल्कि उसे अपने समाज और उसकी जड़ों से भी जोड़ती है। आधुनिक युग में भी यह संबंध उतना ही प्रासंगिक है, बल्कि और भी व्यापक हो गया है। डिजिटल आर्ट, एनीमेशन, फिल्म और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआइ) के माध्यम से कला के नए-नए रूप सामने आ रहे हैं, जो मनुष्य की रचनात्मकता को नई ऊँचाइयों तक पहुँचा रहे हैं। हाल फिलहाल, इस दिवस पर देश-विदेश में विभिन्न स्कूल, कॉलेज और सांस्कृतिक संस्थान इस दिन प्रदर्शनी, कार्यशालाएं और प्रतियोगिताएं, आर्ट फेस्टिवल और लाइव पेंटिंग इवेंट्स आदि आयोजित करते हैं।

आज सोशल नेटवर्किंग साइट्स का युग है और ऐसे समय में आजकल सोशल मीडिया पर भी कलाकार अपनी कला साझा कर जागरूकता फैलाते हैं। कहना ग़लत नहीं होगा कि कला मनुष्य के मानसिक स्वास्थ्य और आत्म-अभिव्यक्ति का महत्वपूर्ण माध्यम है।इसकी शुरुआत अंतरराष्ट्रीय कला संघ द्वारा की गई थी। यहां पाठकों को बताता चलूं कि अंतरराष्ट्रीय कला संघ यूनेस्को से जुड़ा हुआ एक अंतरराष्ट्रीय संगठन है। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि पहली बार इसे वर्ष 2012 में मनाया गया था तथा 15 अप्रैल का दिन इसलिए चुना गया क्योंकि यह महान कलाकार लियोनार्डो दा विंची का जन्मदिन है, जिन्हें कला और विज्ञान के प्रतीक के रूप में देखा जाता है। सरल शब्दों में कहें तो लियोनार्डो दा विंची के जन्मदिन (15 अप्रैल) को समर्पित है, जो विश्व शांति, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और बहुसंस्कृतिवाद के प्रतीक हैं।

उल्लेखनीय है कि वर्ष 2019 में यूनेस्को ने इस दिन को आधिकारिक रूप से मान्यता दी, जिससे इसकी वैश्विक पहचान और मजबूत हुई।हर वर्ष इस दिवस की एक थीम रखी जाती है और वर्ष 2025 में इसकी थीम-%अभिव्यक्ति का बगीचा-काल के माध्यम से समुदाय का निर्माण रखी गई थी। वास्तव में, इस थीम का उद्देश्य था कि कला के जरिए लोगों को जोड़ना, देश और समाज में सामुदायिक भावना को मजबूत करना और रचनात्मक अभिव्यक्ति को बढ़ावा देना।इस वर्ष यानी कि वर्ष 2026 में इस दिवस की थीम-%एकता और उपचार के लिए कला% रखी गई है। यह थीम दुनिया भर में बढ़ती विभिन्नताओं और तनावों के बीच कला की जोड़ने वाली शक्ति पर जोर देती है। यह कला ही होती है जो मानसिक और भावनात्मक उपचार (हीलिंग) में मदद करती है। वास्तव में यह लोगों को प्रेरित करती है कि वे कला के जरिए सामाजिक सौहार्द, सहानुभूति और शांति को बढ़ावा दें। आज का युग डिजिटल युग है, सोशल नेटवर्किंग साइट्स,एआइ व संचार क्रांति का युग है और ऐसे दौर में कला तकनीक व विज्ञान के साथ मिलकर नए रूप में उभर रही है। डिजिटल आर्ट के जरिए कलाकार अब एडोब फोटोशॉप और प्रो-क्रिएट जैसे सॉफ्टवेयर से आसानी से अपनी रचनात्मकता व्यक्त कर रहे हैं। वहीं नोन- फंजीबल टोकन (एन एफ टी) ने डिजिटल कला को आर्थिक पहचान दी है, जिससे कलाकार सीधे अपनी कला बेच सकते हैं। इसके साथ ही एआइ(आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) आर्ट, जैसे डैलई, ने कुछ ही सेकंड में कल्पनाओं को चित्रों में बदलना संभव बना दिया है। इस प्रकार, आधुनिक तकनीक ने कला को अधिक सुलभ, वैश्विक और नवाचारी बना दिया है। यहां पाठकों को बताता चलूं कि डैलई एक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआइ) आधारित इमेज जनरेटर है, जिसे ओपन-एआइ ने विकसित किया है। वास्तव में, यह एक ऐसा टूल है जो टेक्स्ट (शब्दों/वर्णन) को समझकर उसके आधार पर चित्र (इमेजेज) बना देता है। कहना गलत नहीं होगा कि आज के तेज़-रफ्तार और तनावपूर्ण जीवन में कला एक तरह की मानसिक चिकित्सा (थैरेपी) की तरह काम करती है। यही कारण है कि %आर्ट थैरेपी% का उपयोग भी लोगों के मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिए किया जाता है।

अंततः यह बात कही जा सकती है कि मनुष्य और कला का संबंध आत्मा और अभिव्यक्ति का संबंध है-एक के बिना दूसरा अधूरा है। कला मनुष्य को केवल जीवित नहीं रखती, बल्कि उसे संवेदनशील, सृजनशील और मानवीय बनाती है।

भारतरत्न डॉ बी आर आंबेडकर की 135 वी जयंती पर कांग्रेस नेताओं ने माल्यार्पण कर श्रद्धा सुमन अर्पित की

महू (इंदौर समाचार) भारत रत्न डॉक्टर बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर की 135 वीं जन्म जयंती महू जन्मस्थली पहुंचकर कांग्रेस नेताओं ने माल्यार्पण कर श्रद्धा सुमन अर्पित की ।

कांग्रेस प्रवक्ता जुगनू यादव सिंह धनावत ने बताया कि इस अवसर पर मुख्य रूप से प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी, नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंगार, सेवादल कांग्रेस अध्यक्ष अवनीश भार्गव, जिला कांग्रेस अध्यक्ष विपिन वानखेड़े,वरिष्ठ कांग्रेस नेता योगेश यादव, सदाशिव यादव, कैलाशदत्त पांडे, मुजीब कुरैशी, जिला पंचायत सदस्य कन्हैयालाल ठाकुर, रुकमणी नागामा, एडवोकेट दौलत पटेल, यदुनंदन पाटीदार,जुगनू जादवसिंह धनावत, जीतू ठाकुर, शक्तिसिंह गोयल, विजेंद्रसिंह चौहान, गजेंद्रसिंह राठौर, विजय नौलखा,विष्णु मालवीय, पुनीत शर्मा, नरेश जोशी, आनंद गोगलिया, कमल चौधरी, राजकुमार बागड़ी,रंजीत गौहर, दिनेश पंचोली, शिखा अमित अग्रवाल, प्रेम चौहान,देवेंद्र अग्रवाल, मुन्नालाल वर्मा, कैलाश गोयल, नारायण पटेल, विवेक सकोरिया, अशोक आंजना, हुकमसिंह आंजना,गौरव शर्मा, अल अमन खान, शेखर मालवीय, इरशाद कुरैशी, जगमोहन सोन, ओमप्रकाश चौहान,विनोद भार्गव, योगेश बिना, विनोद पटेल, ओम पटेल,साकिर खान, गणेश यादव, छोटन कुरैशी, प्रवीण पाटिल, अभिषेक यादव,मुकेश दुबे, सोनी जी, शुभम जैन, लोकेश जाट, विजय जाट, रोहित ठाकुर, दिखपाल तोमर, कमल गौडाले, कालू जैन, मनमोहन कौशल, सतपाल निनामा, रामप्रसाद बारोड़, दिनेश मावी, इत्यादि सैकड़ो जनों ने जन्मस्थली पहुंचकर श्रद्धा सुमन अर्पित की। और बाहर से पधारे सभी अतिथियों के लिए कांग्रेस परिवार ने जगह-जगह टेंट लगाकर पानी, पोहे, फल, समोसे, व छाछ की व्यवस्था की गई।

महू में अंबेडकर जयंती पर श्रद्धा का सैलाब, नेताओं ने किया नमन

पीथमपुर। संविधान निर्माता डॉ. बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर की जयंती के अवसर पर महू स्थित उनकी जन्मस्थली पर श्रद्धा और सम्मान का भाव उमड़ पड़ा। इस अवसर पर पीथमपुर से अनुसूचित जाति के जिला अध्यक्ष आनंद करोले एवं प्रदेश उपाध्यक्ष डॉ. एस. आर. गोयल ने पहुंचकर बाबा साहेब की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया और उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

कार्यक्रम के दौरान नेताओं ने बाबा साहेब के योगदान को याद करते हुए कहा कि आज देश में जो सामाजिक समानता और शिक्षा का अधिकार देखने को मिलता है, वह उनके संघर्ष और दूरदर्शिता का परिणाम है। उन्होंने विशेष रूप से महिलाओं की शिक्षा पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यदि आज बेटियां पढ़-लिख रही हैं और समाज में आगे बढ़ रही हैं, तो यह डॉ. अंबेडकर की सोच और उनके द्वारा बनाए गए संविधान की देन है। आनंद करोले ने अपने संबोधन में कहा कि बाबा साहेब ने समाज के कमजोर वर्गों को मुख्यधारा में लाने के लिए जो कार्य किए, वह आज भी प्रेरणादायक हैं।

इस दौरान बड़ी संख्या में कार्यकर्ता और समाजजन भी मौजूद रहे। सभी ने एक स्वर में बाबा साहेब के विचारों को आत्मसात करने और समाज में जागरूकता फैलाने का संकल्प लिया।

स्वामी रामचरण ने राम नाम को जन-जन तक पहुँचाया

इन्दौर, । जब राजस्थान की भूमि पर चारों ओर से आक्रमण हो रहे थे, मंदिरों में प्रतिदिन मूर्तियाँ तोड़ी जा रही थीं, हमारे वेदों को जलाया जा रहा था और अज्ञान का बोलबाला था, तब उस युग में महाप्रभु स्वामी रामचरण महाराज ने अवतार लेकर राम नाम की निर्गुण धारा को जन जन तक पहुँचाने की चुनौती को स्वीकार किया था। उनका कृतित्व और व्यक्तित्व विलक्षण था कि आज 228 वें निर्वाण दिवस पर हम उन्हें पुष्पांजलि समर्पित कर उनका पूजन अर्चन कर रहे हैं।

ये दिव्य और प्रेरक विचार हैं अंतर्राष्ट्रीय रामस्नेही संप्रदाय के जगद्गुरु आचार्य स्वामी रामदयाल महाराज के, जो उन्होंने छत्रीबाग रामद्वारा पर सम्प्रदाय के मूलाचार्य स्वामी रामचरण महाराज के 228 वें निर्वाण दिवस पर आयोजित धर्मसभा एवं अन्य कार्यक्रमों में व्यक्त किए। इस अवसर पर सैकड़ों श्रद्धालुओं ने रामचरण महाराज के ग्रन्थ का सामूहिक गायन, पूजन एवं अर्चन कर भजन और महाआरती के बीच उनका पुण्य स्मरण किया। इस मौके पर संत श्री रामनारायण, संत हरसुखराम, संत मनोरथराम, संत ह्रदयराम, संत बोलतेराम आदि ने महाप्रभु के जीवन चरित्र पर प्रकाश डाला और रामधुन, लावणी, जय जयवंती आदि का गायन करते हुए परम्परा के अनुरूप इस उत्सव को आत्मसात किया। छत्रीबाग रामद्वारा ट्रस्ट के लक्ष्मी कुमार मुछाल एवं रामसहाय विजयवर्गीय ने बताया कि इस अवसर पर छत्रीबाग रामद्वारा की ओर से देवेन्द्र कुमार मुछाल, राजेंद्र असावा, वासुदेव सोलंकी, सुनेर सिंह ठाकुर, भूरा पहलवान, हेमन्त काकानी एवं घनश्याम पोरवाल ने जगद्गुरु का स्वागत किया।

मां अंबिका मंदिर अखंड ज्योत

राऊ । मां अंबिका परिसर बड़ा बाजार राऊ में पिछले दिनों अखंड ज्योत खंडित हो गई थी । अखंड ज्योत पुनः अंबाजी गुजरात से राऊ अखंड ज्योत पैदल यात्रा 9 अप्रैल से नगर के भक्तजन ले कर निकले जो 15 अप्रैल बुधवार को नगर प्रवेश करके मंदिर परिसर में अखंड ज्योत स्थापित होगी ।

मन पर नियंत्रण ही जीवन की सबसे बड़ी साधना

इंदौर। प्रेम प्रकाश आश्रम में चल रहे वरसी महोत्सव के अंतर्गत आयोजित सत्संग में सतगुरु स्वामी भागतप्रकाश जी महाराज ने कहा कि मनुष्य का वास्तविक स्वरूप केवल यह शरीर नहीं है। शरीर तो बाहरी इंद्रियों–हाथ, पैर, आंख, नाक, कान आदि–का समूह मात्र है, जबकि मन और बुद्धि आंतरिक शक्तियां हैं, जो मनुष्य के जीवन को दिशा प्रदान करती हैं।

आपने अपने प्रवचनों में कहा कि बाहरी इंद्रियों की अपेक्षा मन और बुद्धि की शक्ति अत्यंत तीव्र होती है। शरीर वृद्ध होने पर हाथ-पैरों की शक्ति कम हो सकती है, किंतु मन के विचार वृद्ध नहीं होते, वे सदैव सक्रिय रहते हैं। इसलिए मन को नियंत्रित करना ही जीवन की सबसे बड़ी साधना है

प्रवचन में भगवतगीता का उल्लेख करते हुए बताया गया कि जैसे अर्जुन ने भगवान के उपदेशों को स्वीकार कर मन को स्थिर किया, उसी प्रकार मनुष्य को भी बार-बार नाम-जप का अभ्यास करना चाहिए। प्रारंभ में मन लगना कठिन प्रतीत हो सकता है, किंतु नियमित अभ्यास से मन स्वयं ही उस दिशा में चलने लगता है और अंततः स्थिरता प्राप्त होती है।आपने आगे कहा कि मन को जीतने का कोई दूसरा मार्ग नहीं है। निरंतर नाम-जप ही वह साधन है, जो मन को वश में कर आत्मिक शांति और आनंद प्रदान करता है। प्रवचन के दौरान उपस्थित प्रमुख संतों में संत स्वामी हरिओमलाल, संत दालूराम जी, भगत हरिदास, भगत दीपक सहित अन्य संत-महात्मा एवं श्रद्धालु बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

भा कम्युनिस्ट पार्टी कार्यालय में अम्बेडकर जयंती मनाई गई

इंदौर। अंबेडकर जयंती के अवसर पर प्रातः 11 बजे डाक्टर भीमराव अम्बेडकर प्रतिमा इंदौर पर माल्यार्पण किया गया जिसमें कामरेड एडवोकेट रुद्रपाल यादव, दिलीप कोल, अरुण चौहान, सी एल सरवत, भागीरथ कच्छवाय, लोकेश वर्मा, बृजलाल बी से, ने माल्यार्पण किया, शाम 5 बजे जिसमें, कामरेड एडवोकेट रुद्रपाल यादव, सोहनलाल शिंदे, भागीरथ कच्छवाय, भारत सिंह ठाकुर, कैलाश लिम्बोदिया सत्यनारायण वर्मा, करूणेश द्विवेदी ने अपने विचार व्यक्त किए।

कार्टून कोना...

तपोनिष्ठ संत श्री श्री 1008 राजगुरु जी महाराज के सानिध्य में कथा का भव्य समापन

इंदौर। तिळहैर-शिवनगर मार्ग स्थित संकट मोचन हनुमंत मंदिर, खेड़ापति आश्रम पिपलिया लोहार में आयोजित विराट हनुमंत मेला मंगलवार को भावनाओं, भक्ति और सेवा के अद्भुत संगम के साथ उस समय स्मरणीय बन गया, जब तपोनिष्ठ संत श्री श्री 1008 राजगुरु जी महाराज के सानिध्य में श्रीमद् भागवत कथा का समापन विशाल भंडारे के साथ सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर हजारों श्रद्धालुओं ने प्रसादी ग्रहण कर स्वयं को धन्य अनुभव किया। समापन दिवस पर आयोजित सर्व समाज निःशुल्क सामूहिक विवाह सम्मेलन में 11 जोड़ों का वैदिक रीति-रिवाजों के साथ पावन परिणय सम्पन्न हुआ।

नवविवाहित जोड़ों को दैनिक उपयोग की अनेक आवश्यक वस्तुएं उपहार स्वरूप भेंट की गईं, जिससे उनके नए जीवन की शुरुआत सहज और सुदृढ़ हो सके।

इस अवसर पर विपिन वानखेड़े, मनोज ठाकुर, घनश्याम पाटीदार, रूपेश बाघमोरे, खुमान सिंह पटेल, संतोष गवलाना, विक्रम सिंह सोलंकी, उमराव सिंह, मनोहर मस्कारा, बलराम पाटीदार, सेठ संतोष पाटीदार, भगवान सिंह ठाकुर, शेखर गौड़, विजय पाटीदार, धर्मेंद्र ठाकुर गरिमा बढ़ाई।

यूँ ही नहीं हो जाते हैं किसी संस्था के निर्विरोध चुनाव

महेश जनसेवा ट्रस्ट के महेश्वरम के निर्वाचन की अंतर्कथा, 13 उम्मीदवारों को इस तरह मनाया गया

इन्दौर। सामाजिक संस्थाओं में नए पदाधिकारी बनने और चुनाव के नाम पर लगभग सभी समाजों में या तो कुछ न कुछ विवाद चल रहे हैं या किन्हीं अन्य कारणों से निर्विरोध चुनाव होने की शालीन परम्परा अब लुप्त होती जा रही है लेकिन पिछले सप्ताह माहेश्वरी समाज की संस्था महेश जनसेवा ट्रस्ट के महेश्वरम संगठन के चुनाव के दौरान कुछ ऐसे प्रसंग देखने को मिले जिनसे लगता है कि समाज में यदि कुछ समझदार और जागरूक लोग हों तो सामाजिक संस्थाओं में चुनाव को लेकर किसी तरह के विवाद या तो होंगे ही नहीं या होंगे भी तो कुछ वजनदार लोगों के हस्तक्षेप से समय रहते उनका समाधान हो जाएगा।

माहेश्वरी समाज के प्रकल्प महेश्वरम, महेश जनसेवा ट्रस्ट के चुनाव निर्विरोध सम्पन्न होने के समाचार तो लगभग सभी समाचार माध्यमों में प्रसारित और प्रकाशित हो चुके हैं लेकिन निर्विरोध और शालीन चुनाव होने के पीछे समाज के कुछ प्रभावशाली लोगों ने जो प्रयास किए, वो इसलिए भी उजागर होने चाहिए कि समाज में चुनाव अथवा विवाद की स्थिति को किस तरह समझदारी के साथ मिल बैठकर टाला जा सकता है।

अ.भा. माहेश्वरी महासभा के पदाधिकारियों तक जब महेश्वरम के चुनाव और जरूरत से ज्यादा उम्मीदवारों के नामांकन भरने की खबर पहुंची तो वरिष्ठ समाजसेवी गिरधरलाल शारडा, रामविलास राठी, रामावतार जाजू एवं ओमप्रकाश धूत को यह जिम्मेदारी सौंपी गई कि वे निर्विरोध चुनाव होने में बाधक बन रहे 13 सदस्यों से उनके नामांकन वापस लेने का अनुरोध करें।

महासभा के निर्देश पर इन चारों वरिष्ठ सदस्यों ने सभी 13 सदस्यों से सम्पर्क किया। ये सभी मारवाड़ी माहेश्वरी प्रगति मंडल से जुड़े उम्मीदवार थे, जिनका करीब 5 से 6 करोड़ रुपए का अंशदान महेश्वरम भवन के निर्माण में लगा हुआ है। भवन के निर्माण की कुल लागत करीब 11 करोड़ रुपए मानी जाती है और उसमें से 6 करोड़ रुपए का योगदान मारवाड़ी माहेश्वरी प्रगति मंडल का माना जाता है जिसमें ट्रस्टी रूम, डोनर्स एवं विशेष सहयोग भी शामिल है।